Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

भूमिका

सर्व-प्रमाणित अरदास का सरल हिन्दी रूपांतरण पाठकों की सेवा में प्रस्तुत है। अरदास का व्याकर्णिक अर्थ है 'प्रार्थना' या 'स्मरण' करना। वाहिगुरू हमें प्यार करते हैं तथा सदा हमारे साथ हैं। प्रभु अपने भक्त-जनों की प्रार्थना को कभी व्यर्थ नहीं होने देते, अपितु विशेष कृपा कर के फलदाई एवं प्रकाशमान करते हैं। प्रभु के ऊपर विश्वास द्वारा हमारा जीवन-उत्थान होना संभव है।

किस ही कोई कोइ मंजु निमाणी इकु तू ॥
(गुरू ग्रंथ साहिब, पृष्ठ 791)
(हे प्रभु! चाहे किसी का कोई भी मिथ्या सहारा हो, लेकिन मेरा तो एक तू ही सहारा है।)

अरदास में आदि से लेकर अंत तक वाहिगुरू और गुरू साहिबान की महिमा, तथा विश्वासी-जनों के बलिदानों का बखान है। पाठकों की सुगमता हेतु अरदास के अंत में विशेष शब्दार्थ प्रस्तुत किये गए हैं तथा उचित स्थानों पर चित्रों द्वारा इस पुस्तक का श्रृंगार किया गया है। आशा है कि हिन्दी-भाषी मित्र भी इस पुस्तक के द्वारा प्रभु की विशेष कृपा के पात्र बन सकेंगे।

हमें अटल विश्वास है कि अरदास आपका जीवन बदल देगी तथा प्रभु पर्मेश्वर आपको व्यक्तिगत शिक्षा तथा आध्यात्मिक विकास प्रदान करेंगे।

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

ध्यान रखने योग्य कुछ बातें

अरदास जीवन के उत्थान का एक उत्तम साधन है। अरदास को आप किसी भी समय या स्थिति में कर सकते हैं। यह न केवल सरल और स्पष्ट है, ब्लकि अत्यंत आनंदमयी तथा फलदायक भी है। वैसे तो अरदास करने के लिए कोई विशेष समय निश्चित नहीं किया गया है, लेकिन उत्तम है कि अरदास दिन में कम से कम दो बार, सुबह और शाम की जाए। इसके अतिरिक्त किसी भी कार्य को आरंभ करने से पूर्व भी अरदास करना हितकारी है। हो सके तो किसी स्वच्छ जगह पर एकाग्रचित होकर अरदास करें।

अगर अरदास करते समय आप गुरू ग्रंथ साहिब के निकट हैं तो गुरू साहिब के आदर में उस ओर खड़े होकर अरदास करें। अरदास करते समय एकाग्रचित होकर गुरू साहिब का स्मरण करें तथा पूर्व भूलों के लिए क्षमा याचना करें। नित्यदिन ऐसा करने से आप ख़ुद में विशेष स्फ़ूर्ति तथा गुणों के संचार को प्रत्यक्ष रूप में अनुभव करेंगे।

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

अरदास

ੴ श्री वाहेगुरू जी की फ़तह

प्रथम पर्मेश्वर की न्यायपूर्ण शक्ति का स्मरण करते हुए तथा उसकी सहायता माँगते हुए (पहले गुरू) गुरू नानक देव जी का ध्यान करते हैं।
फिर (द्वितीय गुरू) गुरू अंगद देव जी, (त्रितीय गुरू) गुरू अमरदास जी तथा (चौथे गुरू) गुरू रामदास जी की सहायता माँगते हैं।
(पंचम गुरू) गुरू अर्जन देव जी, (छठे गुरू) गुरू हरिगोबिंद जी और फिर (सप्तम गुरू) गुरू हरिराय जी का स्मरण करते हैं।
(आठवें गुरू) गुरू हरिकृष्ण का ध्यान करें जिनके दर्शन मात्र से ही सभी दुख जाते रहते हैं।
(नौवें गुरू) गुरू तेगबहादुर जी के स्मरण से नौ निधियाँ शीघ्रता से घर-सदन में प्रवेश करती हैं तथा गुरू जी सर्वदा सहायता करते हैं।
(दसवें गुरू) गुरू गोबिंद सिंघ जी साहिब,
जो सर्वदा सहायता करते हैं।
दसों पातशाहियों की ज्योति श्री गुरू ग्रंथ साहिब जी के
दर्शन दीदार का ध्यान करके, बोलें जी वाहेगुरू ।

पाँचों प्यारों, चारों साहिबज़ादों, चालीस मुक्तों,
हठीयों, जपियों, तपियों, जिन्हों ने प्रभु का नाम जपा,
बाँट कर खाया, देग(पवित्र भोज) चलाई,
(धर्म की ख़ातिर) तेग़ का प्रयोग किया,
(दूसरों की गलतियों को) देख कर अनदेखा किया,
उन प्यारों, सत्य पुरुषों की (आध्यात्मिक) कमाई का ध्यान करके,
खालसा जी, बोलें जी वाहेगुरू।

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

जिन्हों ने धर्म हित शीश दिए, बंद-बंद कटवाए,
खोपड़ीयाँ उतरवाईं, चरखड़ियों पर चढ़े,
तन आरों द्वारा चिरवाए, गुरूद्वारों की सेवा-संभाल के लिए कुरबानीयाँ दी;
(इन सब यातनाओं को सहने के बावजूद) धर्म का त्याग नहीं किया,
सिक्खी केशों, श्वासों संग निभाई,
उनकी पवित्र (आध्यात्मिक) कमाई का ध्यान करके
खालसा जी, बोलें जी वाहेगुरू।

पाँचों तख़्तों, समस्त गुरुद्वारों का धयान करके,
खालसा जी, बोलें जी वाहेगुरू।

प्रथम समस्त खालसा जी की अरदास है जी,
समस्त खालसा जी को,
वाहेगुरू, वाहेगुरू, वाहेगुरू, स्मरण रहे,
स्मरण रहने के परिणाम-स्वरूप सरब सुख हो,
जहाँ-जहाँ खालसा जी साहिब का वास,
वहाँ-वहाँ (उनको माध्यम बनाकर) रक्षा-रिआयत हो,
देग़-तेग़-फ़तह, पंथ की जीत,
श्री साहिब जी सहाय, खालसा जी के बोल-बाले
बोलें जी वाहेगुरू।

सिक्खों को सिक्खी दान, केश दान, रहित दान,
विवेक दान, विश्वास दान, भरोसा दान,(तथा)
दानों में से शिरोमणी नाम दान (की प्राप्ति हो)।
श्री अमृत्सर साहिब जी के दर्शन-स्नान,
चौंकियाँ, झंडे, बुँगे, युगों-युगाँतरों तक अटल (रहें)।
धर्म का जैकार,
बोलें जी वाहेगुरू।

हे अकाल पुरुष! अपने (खालसा/सिक्ख) पँथ के
सदैव सहायता में रहने वाले, कृपा के सागर।
श्री ननकाणा साहिब तथा अन्य गुरुद्वारे
जिन्हें(भारत से बाहर स्थित होने के कारण)
पँथ से बिछोड़ा गया है,

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

(के) खुले दर्शन-दीदार तथा सेवा-संभाल का दान
ख़ालसा जी को प्रदान करें।

हे मान-विहीनों के मान, निसहायों के सहारे,
निराश्रितों के आश्रय, सच्चे पिता वाहेगुरू,
आपके समक्ष प्रार्थना है,
.... (यहाँ अपनी प्रार्थना कहें) ....

(अरदास में से) अक्षरों को बढ़ाने-घटाने के दोष से हमें मुक्त करें,
सरबत के कार्य पूर्ण करें, वे प्यारे मिलें
जिनसे भेंट करके हमें आपका पवित्र नाम स्मर्ण हो।

गुरू नानक देव जी के नाम से ही
आत्मिक शक्ति की प्राप्ति होती है,
आपके द्वारा सरबत का भला हो।

बोले सो निहाल, सत् श्री अकाल ।

वाहिगुरू जी का ख़ालसा,
वाहिगुरू जी की फ़तह।

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

शब्दार्थ

- **गुरू साहिबान** - गुरू परंपरा जो कि **गुरू नानक देव जी** से आरंभ होकर **गुरू ग्रंथ साहिब जी** तक चली आती है, का उद्देशय जगत् में सर्वत्र फैल चुके अज्ञान, पाप एवं अविश्वास का अंत करके धर्म और प्रेम को स्थापित करने का था। गुरू साहिबान एवं संसार के प्रमुख भक्तों के धर्मोपदेश जोकि **गुरू ग्रंथ साहिब** में सुरक्षित हैं, किसी समुदाय, जाति, भाषा या क्षेत्र-विशेष के लिए नहीं अपितु **संपूर्ण मानवता** के मार्गदर्शन के लिए हैं।

  - ❋ गुरू नानक देव जी (सन् 1469-1538)
  - ❋ गुरू अंगद देव जी (सन् 1504-1552)
  - ❋ गुरू अमरदास जी (सन् 1479-1574)
  - ❋ गुरू रामदास जी (सन् 1534-1581)
  - ❋ गुरू अर्जन देव जी (सन् 1563-1606)
  - ❋ गुरू हरिगोबिंद जी (सन् 1565-1644)
  - ❋ गुरू हरिराय जी (सन् 1630-1661)
  - ❋ गुरू हरिकृष्ण जी (सन् 1653-1664)
  - ❋ गुरू तेगबहादुर जी (सन् 1621-1675)
  - ❋ गुरू गोबिंद सिंघ जी (सन् 1666-1708)
  - ❋ गुरू ग्रंथ साहिब जी (को सन् 1708 में गुरू के तौर पर गुरू गोबिंद सिंघ जी द्वारा स्थापित किया गया था तथा वे अनंतकाल तक समस्त जगत् के गुरू एवं मार्गदर्शक के तौर पर विद्यमान हैं)

- **पाँच प्यारे** - **गुरू गोबिंद सिंघ** जी द्वारा 30 मार्च,1699 को आनंदपुर साहिब (जहाँ आजकल गुरूद्वारा तख़्त केसगढ़ साहिब सुशोभित है) में एक महान् सभा के दौरान पाँच निर्भय एवं देश-कौम मे लिए अपनी जान न्यौछावर कर सकने वाले महापुरुषों, जिन्हें सिक्ख जगत् में **पाँच प्यारों** के नाम से याद किया जाता है,

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

का चयन किया था। पाँच प्यारों के नाम क्रमशः दया सिंघ, धर्म सिंघ, मुहकम सिंघ, साहिब सिंघ तथा हिम्मत सिंघ हैं। पाँच प्यारों को सर्वप्रथम गुरू गोबिंद सिंघ जी ने अमृत प्रदान कर के बाद में उनसे ख़ुद अमृत ग्रहण किया था।

- चार साहिबज़ादे - साहिबज़ादे , गुरू गोबिंद सिंघ जी के सुपुत्र थे(अजीत सिंघ जी, जुझार सिंघ जी, ज़ोरावर सिंघ जी, फ़तह सिंघ जी)। अजीत सिंघ जी(18 वर्ष आयु) तथा जुझार सिंघ जी(14 वर्ष आयु) चमकौर के युद्ध में दुष्टों का संहार करते हुए शहीद हुए थे। ज़ोरावर सिंघ जी(8 वर्ष आयु) तथा फ़तह सिंघ जी(6 वर्ष आयु) ने दुष्ट राजा औरंगज़ेब तथा नवाब वज़ीर खान और ब्राह्मण सुच्चा नंद की कुटिल चालों में ना आते हुए, लोभ-लालच एवं जान बचाने की लालसा को ठोकर मारते हुए फ़तहगढ़ साहिब में जीवित दीवारों में चिने जाकर अपने जीवन का बलिदान दिया था।

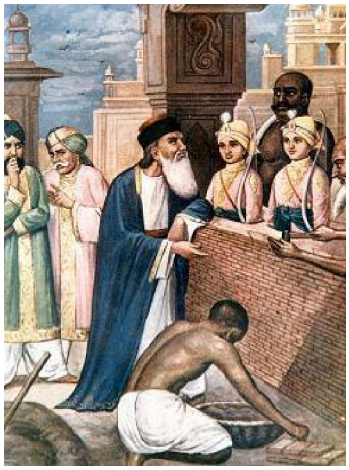

- चालीस मुक्ते - 'मुक्ता' उन्हें कहा जाता है जो अस्तित्व-परक बंधनों से मुक्त हो गये हों। चालीस मुक्ते वे योद्धा-जन थे जो पहले तो गुरू गोबिंद सिंघ जी को त्याग-पत्र देकर उनका साथ छोड़ आये थे परंतु अपनी भूल का अहसास होने के उपरंत महाँ सिंघ की अगुवायी में गुरू जी का साथ देते हुए तथा दुष्ट सेनाओं का संहार करते हुए खिदराणे के युद्ध-मैदान में वीरगति को प्राप्त हुए थे।

- बंद-बंद कटवाए - भाई मनी सिंघ जी को सन् 1735 को लाहौर के निख़ास चौक में, जहाँ अब गुरूद्वारा शहीद गंज सुशोभित है, में बंद-बंद कटवा कर(शरीर के समस्त हड्डी-माँस के जोड़ों को जुदा करके) तथा अनेकानेक कठिन यातनायें देकर सूबेदार ज़क्रिया खान के आदेशानुसार शहीद किया गया था।

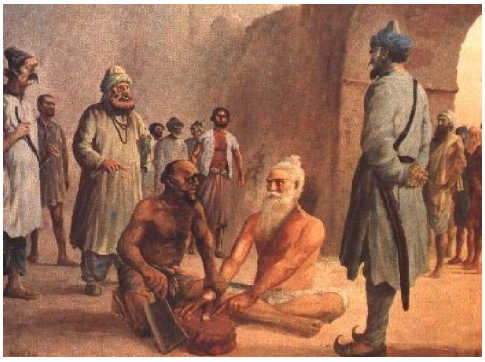

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

- **खोपड़ीयाँ उतरवाईं - भाई तारू सिंघ जी** लाहौर के एक विद्वान तथा धर्मपरायण सिक्ख थे। उन्होंने दुष्ट हरिभगत महंत और सूबेदार ज़क्रिया खान द्वारा लोभ-लालच देकर केश कटवा लेने तथा धर्म-परिवर्तन करने से इनकार कर दिया जिसके परिमाणस्वरूप उन्हें सन् 1747 में गुरूद्वारा शहीद गंज, लाहौर वाले स्थान पर खोपड़ी उतरवा कर दर्दनाक तरीके से शहीद कर दिया गया।

- **चरखड़ियों पर चढ़े - भाई सुबेग सिंघ जी** तथा उनके पुत्र भाई शाहबाज़ सिंघ जी (18 वर्ष आयु) को लाहौर के सूबेदार यहया खान ने इस्लाम ग्रहण करने के बदले दौलत और ज़मीन-जायदाद की पेशकश की परंतु सिक्ख धर्म की सिद्धाँतों पर अडिग रहते हुए दोनों ने इस पेशकश को नमृता-सहित ठुकरा दिया। दुष्ट सूबेदार ने कुपित होकर उन्हें चरखड़ियों पर चढ़ाकर शहीद करने की सज़ा सुना दी। चरखड़ी, एक बड़ी गोल चकती होती थी, जिस के इर्द-गिर्द तेज़ चाकू लगे होते थे। इस प्रकार की दो चक्तियों में से निकालने पर किसी भी मनुष्य की भयावह मौत हो जाती थी। अतः इन दोनों सूरवीरों को भारी यातनाएँ देकर शहीद कर दिया गया।

- **तन आरों द्वारा चिरवाए - भाई मती दास** जी को दुष्ट राजा औरंगज़ेब द्वारा(नौवें गुरू)गुरु तेगबहादुर जी के साथ ही गिरफ़्तार किया गया था। भाई साहिब को आरे द्वारा चीर कर, अर्थात् दो बड़ी और मज़बूत लकड़ियों के बीच बाँधकर एक नुकीले आरे से शरीर को मध्य में से दो भागों में काटकर शहीद कर दिया गया था। ऐतेहासिक साक्ष्यों के अनुसार, भाई

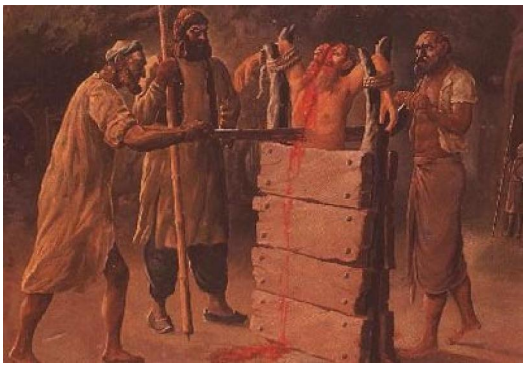

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

मती दास जी शहीद होते हुए भी पूर्ण आनंद में जपु जी साहिब का निरंतर पाठ करते रहे मानो इस भयानक शारीरिक कष्ट का उनपर कोई प्रभाव ही न पड़ रहा हो।

- पाँच तख़्त - तख़्त वे प्रमुख स्थान हैं जहाँ विराजमान होकर गुरू साहिबान सामाजिक सुधार तथा धर्म-न्याय के कार्यों की निगरानी किया करते थे। पाँच तख़्त क्रमशः अकाल तख़्त(अमृत्सर साहिब), हरिमंदर साहिब(पटना), केसगढ़ साहिब(आनंदपुर साहिब), दमदमा साहिब(साबो की तलवंडी, भटिंडा), हज़ूर साहिब(नाँदेड़, महाराष्ट्र) हैं।

- देग़-तेग़-फ़तह - भावार्थ यह है कि हम आध्यात्मिक तथा सामाजिक दोनों प्रकार के दायित्वों को निभाते हुए जीवन निर्वाह करें। यह एक श्रेष्ठ जीवन-संकल्प है तथा सिक्ख धर्म की नींव है, इस प्रकार से सिक्ख धर्म एक पूर्ण तौर पर सामाजिक और प्रगतिशील धर्म है।

- श्री साहिब जी सहाय - श्री साहिब से अर्थ है 'पर्मेश्वर की न्यायपूर्ण शक्ति' तथा 'पवित्र खड़ग' जो हर अमृत अभिलाषी को धारण करवाई जाती है। यह स्वतंत्रता और सूरवीरता से जीवन निरवहन् करने का प्रतीक है। इतिहास साक्षी है कि सिक्ख की तलवार सदैव ग़रीब-दुःखी की रक्षा तथा दुष्टों की भक्षा हेतु उठती रही है तथा रहेगी।

- केश दान - संसार की समस्त महान् सभ्यताओं में केशों को विशेष महत्व दिया गया है। दुनिया के महान् चिंतकों ने न केवल केशों को सतिकार दिया बल्कि खुद भी केशाधारी रहे, इनमें से प्रमुख हैं समस्त गुरू साहिबान, ईसा मसीह, मुहम्मद साहिब(सअव.), श्रीराम, श्रीकृष्ण, वेदव्यास, अरविंद घोष, रविंद्रनाथ टैगोर, विनोबा भावे, भगवान दास, विष्णु दिगंबर, हज़रत मिर्ज़ा कादियानी आदि। व्याकरणविद् पाणिनी, यजुर्वेद, अथर्ववेद(19-32-2), विविध रहितनामों तथा अन्य आध्यात्मिक पुस्तकों ने केशों के महत्व का विशेष उल्लेख किया है। सभी समुदायों के विश्वासी जनों को केश धारण करके आध्यात्मिक शक्ति और तेज-मान की वृद्धि करनी चाहिए।

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

- **रहित दान** - 'रहित' से भाव है धर्मानुसार अपने जीवन का निर्वहन करना। अरदास में प्रभु से 'रहित दान' माँगा गया है अर्थात् प्रभु हम पर बल-विश्वास की कृपा करे ताकि हम गुरू साहिबान के द्वारा दर्शाये धर्म-मार्ग पर अग्रसर हो सकें।

- **नाम दान** - प्रभु के नाम को सिक्ख धर्म में सब से शिरोमणी माना गया है। यही कारण है कि सिक्ख प्रभु-नाम के प्रत्यक्ष रूप 'श्री गुरू ग्रंथ साहिब जी' में अपार-अटूट श्रद्धा रखते हैं तथा उन्हें अपना अविनाशशील गुरू मानते हैं। सिक्ख धर्म में गुरु ग्रंथ साहिब जी के बिना और किसी ग्रंथ या व्यक्ति पर आस्था रखने या नाम-दान लेने के विरुद्ध सख़्त और अटल आदेश हैं।

- **चौंकियाँ, झंडे, बुँगे** - ये सभी सिक्ख धर्म के प्रतीक हैं तथा इनसे सिक्ख धर्म के विल्क्षण और स्वतंत्र रूप का ज्ञान होता है। सिक्ख ध्वजों और धार्मिक स्थलों-सभाओं पर ' ' (खण्डा, जो प्रभु की न्यायपूर्ण शक्ति तथा अपार कृपा को दृढ़ करवाता है) तथा ' ' (एक ओंकार, यह प्रभु-नाम के लिए सर्वश्रेष्ठ चिन्ह् है। व्याकर्णिक तथा धार्मिक साक्ष्यों के अनुसार इसका हिन्दु मत के चिन्ह् ॐ से कोई संबंध नहीं है) चिनह् प्रचलित तथा प्रमाणित हैं।

- **बोले सो निहाल, सत् श्री अकाल** - इसका अर्थ है कि जो कोई विश्वासी-जन 'सत् श्री अकाल' बोलेगा वह अत्यंत आनंदित होगा। 'सत् श्री अकाल ' से भाव है प्रभु का निरंतर स्मरण करना जो एक सिक्ख का परम कर्तव्य है।

- **वाहिगुरू जी का ख़ालसा, वाहिगुरू जी की फ़तह** - स्पष्ट भाव यह है कि प्रभु वाहिगुरू ने धर्म रूपी 'ख़ालसा' का सृजन किया तथा इसी ख़ालसा को माध्यम बनाकर निरंतर प्रभु-पिता की विजय होती है और धर्म स्थापना का कार्य होता रहता है।